वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा के चतुर्थ दीक्षांत समारोह
(05 अप्रैल 2016) के अवसर पर
महामहिम राज्यपाल-सह-कुलाधिपति श्री राम नाथ कोविन्द
का
<u>दीक्षांत भाषण</u>

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा के कुलपति प्रो० लीला चन्द साहा जी, विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर ए०के० सक्सेना जी, प्रधान सचिव डॉ0 बाला प्रसाद जी, कुलसचिव श्री मनोज कुमार जी, सम्मानित अतिथिगण, संकायाध्यक्षगण, अधिषद्, अभिषद् एवं विद्वत परिषद् के सदस्यगण, शिक्षकगण, पदाधिकारीगण, शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण, आज के इस दीक्षांत समारोह में उपाधियाँ ग्रहण करने आये विद्यार्थीगण, अभिभावकगण, विविध छात्र संगठनों के प्रतिनिधिगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों।

मैं सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम के बिहारी महानायक बाबू कुँवर सिंह की प्रेरणादायक स्मृति में स्थापित इस विश्वविद्यालय के 'चतुर्थ दीक्षांत समारोह' में आकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। प्राचीन काल से ही यह धरती शौर्य, पराक्रम और साधना की भूमि रही है। प्राचीन काल में करूष प्रदेश के नाम से विख्यात यह भूभाग सघन वनाच्छादित था। पूरब में सोन नद, पश्चिम में कर्मनाशा, उत्तर में गंगा और दक्षिण में कैमूर पर्वत श्रृंखला से घिरा यह सुन्दर भूभाग अपनी विशिष्ट भौगोलिक रूप-रेखा के कारण लघु भारत का प्रतिरूप कहा जा सकता है।

पुराने शाहाबाद की यह भूमि शौर्य और पराक्रम की धरती होने के साथ ही दुनिया भर के जैन धर्मावलम्बियों के लिए एक पवित्र तीर्थ स्थल भी है। इसके साथ ही यह भारतीय जीवन के विविध क्षेत्रों को अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से समृद्ध करनेवाले शताधिक महापुरूषों, साहित्यकारों, कलाकारों आदि के जन्म और कर्म की भूमि भी है।

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, पुराने शाहाबाद क्षेत्र की समृद्ध विरासत की अभिनव पहचान है। अपनी स्थापना के रजत जयन्ती वर्ष की ओर अग्रसर इस विश्वविद्यालय ने इस अल्पावधि में ही अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। मानविकी, विज्ञान, समाज विज्ञान, वाणिज्य, विधि, शिक्षा, चिकित्सा आदि विभिन्न संकायों से जुड़े विषयों की शिक्षा तो यहाँ दी ही जाती है, एम०बी०ए०, एम०सी०ए०, बी०सी०ए०, बी०बी०ए०, फैशन डिजायनिंग, फिश एंड फिशरीज, जैव प्राद्यौगिकी जैसे व्यावसायिक और तकनीकी महत्त्व के कई विषयों की पढ़ाई भी यहाँ हो रही है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि सम्प्रति यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्ययन परिषद् (नैक) से मूल्यांकित एवं प्रत्यायित होने की दिशा में तेजी से प्रयासरत है। मेरी शुभकामना है कि यह विश्वविद्यालय अपने प्रयासों में शीघ्र सफल हो और देश के शैक्षिक मानचित्र पर अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित करे।

आज वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय द्वारा 'चतुर्थ दीक्षांत समारोह' का आयोजन किया गया है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही दीक्षांत समारोहों के आयोजन की सुदीर्घ परम्परा रही है। बिहार के प्रायः समस्त विश्वविद्यालयों में दीक्षांत समारोह आयोजित हो रहे हैं। यह एक शुभ और श्रेष्ठ

अभियान है। इसे अनवरत जारी रखना चाहिए। इस प्राचीन गौरवशाली परम्परा का अनुपालन करने के लिए निस्संदेह वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय-परिवार हार्दिक बधाई का पात्र है।

इस 'दीक्षांत समारोह' में विश्वविद्यालय द्वारा विगत वर्ष की परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को उपाधि-पत्र प्रदान किये जा रहे हैं। अपने-अपने विषयों में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान हासिल करने वाले छात्र-छात्राओं को स्वर्ण पदकों से भी विभूषित किया गया है। मैं उन सभी को हृदय से बधाई और आशीर्वाद देता हूँ। मेरी शुभकामना है कि वे अपने जीवन में नित नूतन ऊँचाइयाँ हासिल करें।

आज हम विज्ञान और तकनीकी विकास के अत्यंत गतिशील दौर से गुजर रहे हैं। संचार-क्रांति के फलस्वरूप आज दूरियाँ कम हो गयी हैं और सम्पूर्ण विश्व तेजी से एक 'विश्व ग्राम' (Global Village) में बदलता जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आई क्रांति से विभिन्न देशों के बीच दूरी अब कोई समस्या नहीं रह गई है। आज इंटरनेट की सुविधा ने दुनिया के किसी भी देश के किसी भी पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों को, तकनीकी ज्ञान और चिकित्सकीय परामर्श को मिनटों में सर्वसुलभ बना दिया है। इसलिए आज विश्वविद्यालयों को अभिनव वैज्ञानिक शोधों और तकनीकी क्षेत्र में हासिल की जा चुकी नवीनतम उपलब्धियों के आदान-प्रदान के केन्द्र के रूप में विकसित होने की आवश्यकता है। विज्ञान और तकनीकी के तीव्रगति से हो रहे निरंतर विकास के कारण आज शिक्षा के क्षेत्र में - खासकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में लगातार बदलाव परिलक्षित हो रहे हैं। इन परिवर्त्तनों का उद्देश्य विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने की क्षमता प्रदान करना है। वे ज्ञानी बनें, कुशल उद्यमी बनें, प्रतिभा सम्पन्न वैज्ञानिक बनें, अच्छे खिलाड़ी बनें, जिम्मेवार प्रशासक बनें, सफल राजनेता बनें, किन्तु साथ ही श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों से सम्पन्न मनुष्य भी बनें। आपका ध्यान प्रसिद्ध दार्शनिक, महान शिक्षाविद् एवं भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन के शिक्षा के उद्देश्य तथा शिक्षित व्यक्तियों के दायित्वों के बारे में अभिव्यक्त विचारों की ओर आकृष्ट करना चाहूँगा। डॉ० राधाकृष्णन की अपेक्षा थी कि ''विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों में केवल सूचनाओं के ग्रहण करने की क्षमता ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक प्रवृत्तियों को विकसित करने का भी प्रयास करेंगे। छात्र-छात्राओं में सोच एवं शोध की ऐसी रूचि पैदा करेंगे, जिससे वे स्वतंत्र खोज, चिंतन तथा निष्पक्ष बौद्धिक निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये समर्थ बन सकें।'' मुझे विश्वास है कि वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय इस दिशा में अपने स्तर से भरपूर प्रयास करेगा।

मैं चाहता हूँ कि विश्वविद्यालय अपने परम्परागत दायित्वों का निर्वहन करने के साथ ही अपने पोषक क्षेत्र के सर्वांगीण विकास की दिशा में भी कुछ सार्थक प्रयास करे। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से गाँव-गाँव में साक्षरता, स्वच्छता, जन्म-प्रबंधन, पर्यावरण-सुरक्षा, सामाजिक सदभाव, जनसंख्या नियंत्रण और नारी सशक्तीकरण आदि के पक्ष में अनुकूल वातावरण-निर्माण का कार्य किया जा सकता है। जीवन को सुखी रखने के लिये आवश्यक है कि उपभोक्तावादी संस्कृति को त्यागते हुए, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के अनुसार हम सादगीपूर्ण जीवन-शैली को अपनाएँ। समतामूलक समाज-निर्माण के आदर्श को ध्यान में रखते हुए महात्मा गाँधी जी ने भी हमें 'अपरिग्रह' का संदेश दिया था। ऐसी जीवन-शैली अपनाने से न केवल पर्यावरण-सुरक्षा में मदद मिलेगी, बल्कि सतत् विकास की प्रक्रिया भी तेज होगी। मुझे प्रसन्नता होगी, अगर हमारा यह विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों को इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित करे।

पठन-पाठन के साथ-साथ राष्ट्र-निर्माण में सहायक इन कार्यों में रूचि लेने के कारण हमारे छात्र भविष्य में सजग और जिम्मेदार नागरिक बन सकेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। हम सौभाग्यशाली हैं कि भारत में युवा शक्ति बड़ी संख्या में उपलब्ध है। हमारे युवक शिक्षित एवं चिंतनशील हैं। उन पर देश को आगे ले जाने की जिम्मेदारी है। हर पीढ़ी को नई-नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यहाँ उपस्थित छात्रों की पीढ़ी को वर्षों तक विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास करने होंगे। मुझे विश्वास है कि युवा-शक्ति देश को नये आयामों की ओर अग्रसर करने में सहायक सिद्ध होगी। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

शाहाबाद की यह धरती देश और समाज के लिए जीने-मरनेवालों की धरती है। ब्रह्मा की सृष्टि के समानान्तर एक अभिनव सृष्टि रचने का प्रयास करनेवाले महर्षि विश्वामित्र हों, आम-जनता के हित में राजसत्ता की ताकत का इस्तेमाल करनेवाले महान शासक शेरशाह सूरी हों या फिर अंग्रेजी शासन की अपराजेयता के मिथ को झुठलाने वाले बाबू कुँवर सिंह हों - सभी ने निजी हितों को अनदेखी करके देश और समाज-हित में अपने आप को समर्पित कर दिया था। यहाँ के धरती-पुत्रों ने गिरमिटिया मजदूरों के रूप में मॉरिशस सहित कई देशों में जाकर अपने श्रम और पराक्रम से उन्हें समृद्धि के द्वीपों में बदल दिया। आज वे वहाँ 'गिरमिटिया' नहीं, 'गवर्नमेंट' हैं। आज भी यहाँ के नौजवान हजारों की संख्या में देश की सीमाओं की रक्षा के कार्य में लगे हुए हैं। यहाँ के लोग अपने लिए नहीं, औरों के लिए जीने में विश्वास करते हैं, देश और दुनियाँ के लिए मर-मिटने में विश्वास करते हैं। मेरी मंगलकामना है कि आज के इस 'दीक्षांत समारोह' में उपाधियाँ ग्रहण करने वाले हमारे विद्यार्थी समाज और राष्ट्रहित में समर्पण और त्याग की भावना को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। इससे वे अपने जीवन में सफल भी होंगे और सुखी भी रहेंगे। मैं वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति तथा विश्वविद्यालय-परिवार को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने अथक परिश्रम से इस विश्वविद्यालय को प्रगति-पथ पर लाने का प्रशंसनीय कार्य किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सम्पूर्ण बिहार में एक नई शैक्षिक ज्योति जलेगी। हम सभी मिलकर एक नया बिहार, शिक्षित बिहार, स्वच्छ और समृद्ध बिहार बनायेंगे। आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द।

***